11th Lecture On-

धर्म सुधार आंदोलन एवं
जैन धर्म

[BA- HONS]
[PAPER- I]

- ममता रानी
(इतिहास विभाग)
एस. एन. एस. आर. के.
एस. कॉलेज, सहरसा।

Scanned with CamScanner

# धार्मिक सुधार आन्दोलन



→ 600 ई० पूर्व में हिन्दू धर्म को चुनौती देते हुए 62 सम्प्रदाय का उदय हुआ जो नास्तिक सम्प्रदाय था। इन सभी के प्रवर्तक क्षत्रिय जाति से सम्बन्धित थे। इस काल को प्राचीन भारत के इतिहास में पुनर्जागरण का काल और द्वितीय नगरीकरण का काल माना गया है। जिसके निम्नलिखित कारण थे —

सामाजिक कारण :—
समाज में वर्ण व्यवस्था, छुआछूत, महिलाओं की स्थिति और भेद-भाव के चलते यह आन्दोलन शुरु हुआ।

धार्मिक कारण :— धर्म के क्षेत्र में अंधविश्वास बहुत अधिक खर्चीला और पुरोहितों के वर्चस्व ने इस आन्दोलन को जन्म दिया।

कृषि मूलक संस्कृति :—
यह आंदोलन गंगा के उपजाऊ मैदान के क्षेत्र में शुरु हुआ था क्योंकि बहुसंख्यक जनता ने इसका समर्थन कर दिया।

⇒ अध्ययन की सुविधा के लिए इस आंदोलन को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है —

(a) नास्तिक धर्म :— ईश्वर की सत्ता में जो विश्वास नहीं करता हो उसे नास्तिक कहा गया। जैसे :- जैन धर्म और बौद्ध धर्म।

(b) आस्तिक धर्म :— जो ईश्वर को मानता हो उसे इसके अन्तर्गत शामिल किया जाता है। जैसे - भागवत एवं शैव धर्म।

Scanned with CamScanner

# जैन धर्म

→ जैन शब्द जीन शब्द से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ विजेता होता है अर्थात् जिसने स्वयं को जीत लिया हो। इस धर्म का 900 ई०पू० में जन्म हुआ था, लेकिन महावीर स्वामी के समय यह सबसे अधिक लोकप्रिय हुआ।

→ इस धर्म के प्रवर्तक या प्रथम गुरु (तीर्थंकर) ऋषभदेव थे, जिनका प्रतीक चिन्ह वृषभ है।

→ **ऋषभदेव** अयोध्या के सूर्य वंश घराने से संबंधित थे। इनका और अरिष्टनेमि का नाम ऋग्वेद में मिलता है। जैन धर्म मे कुल 24 तीर्थंकर हुए, जिसमे दो को ऐतिहासिक पुरुष की संज्ञा दिया गया है। धर्म के अनुसार अरिष्टनेमि को भगवान कृष्ण का भाई माना गया है। ऋषभदेव ने हिमालय पर्वत पर निर्वाण को प्राप्त किया था।

→ पार्श्वनाथ :- यह 23 वें और प्रथम ऐतिहासिक तीर्थंकर थे। यह काशी नरेश अश्वसेन के पुत्र थे। इन्होंने सम्मेद पर्वत के समीप ज्ञान को प्राप्त किया था। इनको 84 वे दिन ज्ञान की प्राप्ति हुआ था, जिसको कैवल्य (सम्पूर्ण ज्ञान) कहा गया है। इन्होंने सर्वप्रथम प्रभावती देवी को अपना उपदेश दिया था। इनका प्रतीक चिन्ह सर्प था। इन्होंने 4 महाव्रत का प्रतिपादन किया था —

(a) सत्य (b) अहिंसा (c) अपरिग्रह (d) अस्तेय।

— इनका सबसे प्रिय शिष्य केशी था। इनके अनुयायियों को निर्ग्रन्थ (बंधन रहित) कहा गया है। पार्श्वनाथ महावीर स्वामी से लगभग 250 साल पहले इस धर्म को लोकप्रिय बनाने का कार्य किये थे। इन्होंने अपने अनुयायियों को सफेद वस्त्र पहनने का अनुरोध किया था।

Scanned with CamScanner

→ महावीर स्वामी :-

यह चौबीसवें और अंतिम तीर्थंकर थे। इनको जैन धर्म का वास्तविक संस्थापक माना गया है।

- जन्म स्थान → कुण्डग्राम (वैशाली)
- जन्म तिथि → 540 BC
- पिता का नाम → सिद्धार्थ
- माता का नाम → त्रिशला
- पुत्री का नाम → प्रियदर्शनी (अनुजा)
- दामाद का नाम → जमाली
- पत्नी का नाम → यशोदा
- कुल का नाम → ज्ञातृक
- बचपन का नाम → वर्द्धमान

- प्रतीक चिन्ह - सिंह।
- इनकी माता त्रिशला देवी लिच्छवी नरेश चेटक की बहन थी। इन्होंने सर्वप्रथम उपदेश जमाली को दिया था। जमाली ने ही सर्वप्रथम महावीर स्वामी का विरोध किया था। 30 वर्ष की अवस्था में वर्द्धमान अपने बड़े भाई नंदिवर्धन की आज्ञा लेकर गृह त्याग किया और यति (सन्यासी) हो गये। महावीर स्वामी 12 वर्षों तक इधर-उधर भटकने के बाद 42 वर्ष की उम्र में जृम्भिक ग्राम के समीप ऋजुपालिका नदी के किनारे साल वृक्ष के नीचे कैवल्य को प्राप्त किये। तब इनको अर्हत, निर्ग्रंथ, महावीर आदि नामों से संबोधित किया गया।

Scanned with CamScanner

वर्तमान में जुम्भिक ग्राम की पहचान हजारीबाग के समीप पहाड़ी को (पारसनाथ की पहाड़ी) और ऋजुपालिका नदी की पहचान दामोदर नदी की सहायक नदी बराकर के रूप में किया जाता है।

→ भगवान महावीर ने ज्ञान प्राप्ति के बाद अपने मतों का प्रचार-प्रसार किया और 11 संघ की स्थापना किया और 11 अध्यक्ष को नियुक्त कर दिया। अपने अंतिम समय में 72 वर्ष की उम्र में राजगीर के पावापुरी नामक स्थान पर काया क्लेश का पालन करते हुए मृत्यु को प्राप्त हुए। यह स्थल उस समय मल्ल गणराज्य के अधीन था।

सिद्धांत :- (a) त्रिरत्न :- पूर्व जन्म के कर्मफल को समाप्त करने के लिए और वर्तमान समय के कर्मफल से बचने के लिए त्रिरत्न को अपनाया गया।
जैसे - (i) सम्यक ज्ञान
(ii) सम्यक आचरण
(iii) सम्यक ध्यान या दर्शन।

(b) पंचमहाव्रत :- जैन धर्म में पाँच प्रकार की नियमों की स्थापना किया गया है, जिसे पंचमहाव्रत कहा जाता है।
- महावीर स्वामी ने ब्रह्मचर्य नामक पाँचवा महाव्रत को जोड़ दिया था।

(c) अनेकांतवाद :- यह जैन धर्म का दर्शन है, जो सांख्य दर्शन के करीब माना जाता है। यह सात भाग में विभाजित है, इसलिए सप्तभंगी भी कहा जाता है। इसके अनुसार किसी भी वस्तु के बारे में शत प्रतिशत सही या शत प्रतिशत गलत है नहीं कहा जा सकता है।

Scanned with CamScanner

- अनेकांतवाद को सप्तभंगी या स्याद्वाद भी कहा जाता है।

(d) सृष्टि का निर्माण :-
जैन धर्म के संस्थापक अनुसार सृष्टि का निर्माण 6 पदार्थों से मिलकर बना है। जैसे -
जीव, भौतिक पदार्थ, धर्म, अधर्म, काल और आकाश।

(e) विकास :- जैन धर्म के विकास में आगजनता, व्यापारी वर्ग, विभिन्न वंश के शासक और जैन संगीत ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाया।

- जैन धर्म सबसे अधिक लोकप्रिय व्यापारी वर्ग में था।

(f) प्रथम जैन संगीति - 300 ईपूर्व
स्थान - पाटलिपुत्र, शासक - चन्द्रगुप्त मौर्य
अध्यक्ष - स्थूलभद्र,
प्रथम विभाजन ← दिगंबर सम्प्रदाय
श्वेतांबर सम्प्रदाय।

(g) द्वितीय जैन संगीति :- 512 ई०
स्थान - वल्लभी (गुजरात)
अध्यक्ष - देवर्धि क्षमाश्रमण।
शासक - ध्रुवसेन

- इस संगीति में अधिकांश जैनग्रंथ को अर्द्ध मागधी या प्राकृत भाषा में लिखा गया।

=*=

Scanned with CamScanner